मध्यकालीन भारतीय समाज

मध्यकालीन भारतीय समाज में भी धर्म का अत्यधिक प्रभाव था, इसलिए शिक्षा भी धार्मिक थी। उस समय शिक्षा में भी धार्मिक प्रभाव अधिक था।

आधुनिक भारतीय समाज

आधुनिक समाज पर विज्ञान का विशेष प्रभाव है। अतः शिक्षा के द्वारा इस बात पर बल दिया जाता है कि व्यक्ति की चिन्तन, तर्क तथा निर्णय आदि मानसिक शक्तियाँ पूर्णरूपेण विकसित हो जाएँ। ध्यान देने की बात है कि वर्तमान समाज के विभिन्न रूप हैं। प्रत्येक समाज अपने-अपने सिद्धान्तों तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है, जिसे निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है

भौतिकवादी समाज

भौतिकवादी समाज में भौतिक सम्पन्नता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज में नैतिक आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों, रचनात्मक कार्यों तथा व्यक्ति के विवेक का कोई स्थान नहीं होता। शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

आदर्शवादी समाज

इस समाज के लोग विचार, आदर्श को अधिक महत्त्व देते हैं। आध्यात्मि... विकास के आदर्शों का ध्यान रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था की ... समाज में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य के ... विकास पर बल दिया ...

(i) श्रम विभाजन (ii) उत्तराधिकार

(iii) आय एवं सम्पत्ति का प्रबन्ध

अन्य कार्य

- सांस्कृतिक कार्य
- मनोरंजन कार्य
- अनुभव स्थानान्तरता।

Topic. SC-102, Sem-1 20.07.21

शिक्षा के विकास में समाज का महत्त्व

शिक्षा के विकास में समाज के महत्त्व निम्न प्रकार देखा जा सकता है

प्राचीन भारतीय समाज

प्राचीन भारतीय समाज में जाति-धर्म का अधिक प्रभाव था, इसलिए शिक्षा कुछ विशेष जाति तक ही सीमित थी। लोग धार्मिक सिद्धान्तों का अनुसरण करते थे और व्यक्ति के चारित्रिक एवं धार्मिक विकास पर अधिक बल दिया जाता था।

मध्यकालीन भारतीय समाज

मध्यकालीन भारतीय समाज में भी धर्म का अत्यधिक प्रभाव था, इसलिए शिक्षा भी धार्मिक थी। उस समय शिक्षा में भी धार्मिक प्रभाव अधिक था।

आधुनिक भारतीय समाज

आधुनिक समाज पर विज्ञान का विशेष प्रभाव है। अत: शिक्षा के द्वारा इस बात पर बल दिया जाता है कि व्यक्ति की चिन्तन, तर्क तथा निर्णय आदि मानसिक शक्तियाँ पूर्णरूपेण विकसित हो जाएँ। ध्यान देने की बात है कि वर्तमान समाज के विभिन्न रूप हैं। प्रत्येक समाज अपने-अपने सिद्धान्तों तथा आदर्शों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करता है, जिसे निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है

भौतिकवादी समाज

भौतिकवादी समाज में भौतिक सम्पन्नता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। ऐसे समाज में नैतिक आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों, रचनात्मक कार्यों तथा व्यक्ति के विवेक का कोई स्थान नहीं होता। शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

आदर्शवादी समाज

इस समाज के लोग विचार, आदर्श को अधिक महत्त्व देते हैं। आध्यात्मिक विकास के आदर्शों का ध्यान रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। अत: ऐसे समाज में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य के अन्तर्गत चरित्र का गठन तथा नैतिक विकास पर बल दिया जाता है।

प्रयोजनवादी समाज

ऐसे समाज के लोगों का विश्वास है कि सत्य सदैव ... के अनुसार बदलता रहता है।